# फ़ोटोतंत्र (पत्रिका Effetto Arte के लिए लेख)

गर्मियाँ।
वह समय जब हम अपना घर छोड़कर किसी और जगह चले जाते हैं — कोई भी जगह।
कलाकार भी यात्रा करता है, बाक़ी भगोड़ों के बीच, और परमाणु-उत्तर पलायन को देखता है।
इटली की उन सुंदर गलियों में सब कुछ एक फ़िल्म-सेट है: स्त्री-पुरुष एक-दूसरे की तस्वीरें उतारते हैं, चीख़-चीख़कर मुद्राएँ बनवाते हैं; इस तरह बनी तस्वीरें फ़ोनों से रवाना होकर दूसरों के उपकरणों तक पहुँचती हैं — वे लोग भी संभवतः अपने रिश्तेदारों को किन्हीं विदेशी दृश्यों के आगे अमर करने में लगे होंगे।
अगर दृश्य-स्मृतिचिह्नों के इस आवागमन का नक़्शा बनाया जा सके, तो पता चले कि हम संयोगवश बहुत-से अजनबियों की छुट्टियों की तस्वीरों में मौजूद हैं, और हमारी तस्वीरें कॉल-सेंटर कर्मचारियों की काल्पनिक छुट्टियों का वर्णन करने के काम आती हैं।
आल्प्स से पिरामिडों तक यह तात्क्षणिक उन्माद हर किसी को लग जाता है: हमें यह सिद्ध प्रमाण पेश करना है कि आज हम सचमुच इस जगह पर थे; सबको पता चलना चाहिए कि आज हम ज़िंदगी का मज़ा ले रहे हैं।
हम अपनी डिजिटल स्मृतियाँ ठसाठस भर देते हैं, अपनी हार्ड डिस्कें अपनी सांसारिक ख़ुशी की तस्वीरों से भर देते हैं!
यद्यपि यह निश्चित है कि हर चीज़ कम से कम एक बार तो पहले ही खींची जा चुकी है, हमें यक़ीन है कि वह हमारे द्वारा नहीं खींची गई थी — और इतना हमारे लिए काफ़ी है।
हम भावी पीढ़ियों के लिए, इतिहास के लिए, भविष्य की डिजिटल स्मृति के लिए दस्तावेज़ बनाते हैं।
साझा करने के आभासी स्थल जन्म लेते हैं, जहाँ हम अपनी छुट्टियों का जीवन तस्वीरों में सुना सकें: अपने पराक्रम, अपनी विजयें, ठहरी हुई दुनिया पर अपनी दृष्टि; हम अपनी ही कल्पित छवि बेचते हैं।
हम कोशिश करते हैं कि जितने ज़्यादा लोग देख सकें, देखें; हम साझा करते हैं, अपनी छुट्टियों की तस्वीरों का उत्पादों की तरह प्रचार करते हैं, अजनबियों को मोहते हैं ताकि वे हमारे अनुयायी बन जाएँ: जो मुझसे प्रेम करता है, वह मेरे पीछे आए।
मेरी ख़ुशी, मेरा मनोरंजन, मेरा आनंद — मैं इन्हें तुम्हारे समय के एक क्षण के मोल बेचता हूँ, ठीक उतने का जितना तुम्हें यह कहने में लगता है कि तुम्हें पसंद आया, कि तुम सराहते हो, कि तुम मुझसे मिलना चाहोगे।
घटिया रुचि की इस विराट दृश्य-सूचना की आवाजाही से आख़िर बचता क्या है?
कुछ नहीं।
जो तस्वीरें हमें शानदार लगी थीं, उनमें से अधिकांश हम ख़ुद ही मिटा देते हैं: एक में दिखता है कि हम मोटे हो गए, दूसरी में भतीजी ने सींग बना दिए, और इसमें कोई मूर्ख कलाकार डूबते सूरज के आगे आ गया।
बस एक नन्हा-सा हिस्सा हमारे सोशल नेटवर्कों पर पहुँचेगा, जहाँ वह युगों-युगों तक अमिट बना रहेगा, आमीन।
पंद्रह मिनट की शोहरत से बढ़कर यह पूरी एक ज़िंदगी है, जो यह बताने में बीतती है कि हम कैसा होना चाहेंगे, कैसे जीना चाहेंगे, दूसरों की नज़र में कैसा दिखना चाहेंगे।
कभी ऐसा था कि बीस स्लाइड-मैगज़ीनों का प्रदर्शन दिखाकर मित्रों और संबंधियों का जीवन दूभर किया जा सकता था; सबसे साहसी लोग छुट्टियों में VHS पर एक वीडियो बना लाते थे, जिसमें टूर-गाइड की पढ़ी हुई ध्वनि-टिप्पणी होती थी; आज फ़ोटोग्राफ़ी और वृत्तचित्र मुफ़्त हैं, लोकतंत्र की तरह।
हर कोई तस्वीर खींच सकता है, फ़िल्म बना सकता है, वोट दे सकता है, राजनीतिक दल बना सकता है — और वे सचमुच ऐसा करते हैं, बिना शर्म के, अपनी संस्कृति या योग्यता की परवाह किए बिना।

प्रेक्षक कलाकार, स्थिति का गहरा विश्लेषण करते हुए, समझ जाता है कि इस दौर में किसी दृश्य का आनंद लेने या किसी स्मारक को देखने के केवल चार उपाय हैं:
क) उस दृश्य या स्मारक की तस्वीर इंटरनेट पर खोज लेना।
ख) सुबह पाँच बजे उठना — और कोई-कोई ऐसा करता भी है, पर कलाकार नहीं, वे बहुत आलसी हैं।
ग) किसी कैफ़े में जाकर विज्ञान-कथा की एक अच्छी किताब पढ़ना।
घ) उत्तर कोरिया में जा बसना।
जब तक हम सोचते रहते हैं कि क्या किया जाए, एक लड़की अपनी उस सहेली की तस्वीर खींचती है जो ख़ुद अपनी सेल्फ़ी ले रही है; घंटियाँ लगातार बजती हैं; आज एक और कला मर गई, और फ़ोटोग्राफ़र उन बीते ज़माने के बेकार, अद्भुत, ज़िद्दी लोगों के स्वर्ग में चित्रकारों से आ मिले।
क्या कोई युवा कुमारी आएगी, जो फ़ोटोग्राफ़ी के विचार को ही शून्य से फिर सोचे?
क्या कोई दैवी सौर वर्षा डिजिटल दुनिया को नष्ट कर, फ़ोटोग्राफ़र कलाकार को उसकी गरिमा लौटा देगी?
हम बस इस निश्चय से तसल्ली पा सकते हैं कि जिस डिजिटल स्मृति में हम अपनी तस्वीरें सहेजते हैं, वह वर्ष 4000 के पुरातत्वविदों तक साबुत नहीं पहुँचेगी — और इस तरह इतिहासकार हमारे युग को सब युगों में सबसे दयनीय क़रार नहीं दे पाएँगे।
स्कूल में हमें दफ़्न हो चुके युगों के हृदयविदारक पाठ और विकृत दृश्य निगलने पड़ते हैं, और यह सब केवल काग़ज़ और पपाइरस की अमरता के कारण; इसके विपरीत हमारा युग बेकार सूचना की बेतहाशा मात्रा पैदा करता है, जो गहन पारिस्थितिकी के एक
अचेतन कर्म में स्वयं को नष्ट कर लेती है।

Luca Motolese · Siracusa 2017

motolese.com — मूल पाठ इतालवी में